University in News on 25 November 2023

NBT PAGE 6

दूसरों के पीछे चलने के बजाय अगुआ बनकर सामने आया LU

लखनऊ विश्वविद्यालय का 103वां स्थापना दिवस आज, वीसी ने गिनाईं उपलब्धियां

■ एनबीटी सं, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय का 103वां स्थापना दिवस शनिवार को मनाया जाएगा। इस मौके पर विवि की अब तक की उपलब्धियों और इंतजाम की समीक्षा में लगेंगे हैं। स्थापना दिवस से पहले इस पूरे पर एनबीटी के पाठकों के दीपन एलयू वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने कहा कि व्यवस्था विकसित नहीं, बल्कि विकासशील होती है। लखनऊ विश्वविद्यालय में विकास की सतत प्रक्रिया में है। फिलहाल लखनऊ विश्वविद्यालय ने कई मामलों में दूसरों का अनुसरण करने के बजाय अगुआ बनकर आगे आया है।

? पुराने गौरवशाली अवसर पर कुलपति के रूप में कैसा महसूस कर रहे हैं?

किसी संस्थान का स्थापना दिवस उससे जुड़े लोगों के परिश्रम के प्रतिफल की अनुभूति का दिवस होता है। इसके साथ नई सोच के साथ दिवस विशेष करने का काम भी होता है। ऐसे मौके पर भविष्य के लिए योजनाओं की भी समीक्षा करती है। स्थापना दिवस ऐसा मौका है, जब अपने प्रयासों की समीक्षा की जा सकती है।

? आगे किस तरह की चुनौतियां देखते हैं?

संस्थाएं जब तक समाज से नहीं जुड़ेंगे, तब तक वह अपनी सार्थक छवि स्थापित नहीं कर पाएंगे। समाज के वांछित विषयों को संज्ञान लेकर पाठ्यक्रम बनाए जाने चाहिए। वैश्विक जरूरतों के साथ विषय के मूल स्वरूप को भी बरकरार रखना जरूरी है। लखनऊ विश्वविद्यालय में पूरी सजगता के साथ शिक्षा की उत्कृष्टता को बढ़ाने का प्रयास हो रहा है।

? हाल के वर्षों में एलयू में बदलाव को किस तरह देखते हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय का समृद्ध इतिहास रहा है। यहां उज्जवल भविष्य की अनंत संभावनाएं भी है। बीचे कुछ साल में यहां दो मुख्य बिंदुओं पर प्रयास हुए हैं। पहला यह कि समाज के हर वर्ग के लिए उत्कृष्टता शोधपरक शिक्षा उपलब्ध हो। इसके साथ विवि उपकौशलों और योग्यता से जुड़ी पहचान हो।

? आपकी नजर से एलयू के हिस्से में क्या खास उपलब्धियां रही हैं?

एलयू ने फाउंडेशन होने के बजाय इनोवेशन होने का प्रयास किया है। पूरे देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 का अनुपालन करने वाला एलयू पहला विश्वविद्यालय है। नैक में सर्वोत्कृष्ट ग्रेड प्राप्त करना हो या एनआईआरएफ, क्यूएस और टीएचई जैसे अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में सफलता प्राप्त करने वाला वह पहर प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय बना। समान्य विश्वविद्यालय श्रेणी में अनिवार्यन और दूरस्थ शिक्षा देने वाला भी यह प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय बन गया है। फोर इंगर अंडर ग्रेजुएट प्रोग्राम, वन इंयर पीजी प्रोग्राम और पीएचडी आंटिसेस विथ पर्फ टाइम पीएचडी जैसी कई नीतियों के निर्धारण में विवि ने सराहनीय काम किया। एलयू के बाद दूसरी जगह भी ऐसी शुरुआत हुई है।

? कैंपस में स्टूडेंट्स की सुविधा के लिए क्या प्रयास किए गए?

कोवी शिट वैसी, वैसी केयर फंड, स्टूडेंट ओपेडी समेत कई योजनाओं पर देश-प्रदेश के कई संस्थाओं में विस्तृत स्वीकृति हुई। सिस्ने प्रमोशन पॉलिसी और कंसाल्टन्सी पॉलिसी के बेहतर परिणाम मिलने शुरू हुए हैं। फादर्स व्यवस्था के तहत 200 से ज्यादा शिक्षकों की भर्ती की गई।

कई कॉलेजों ने बिना रजिस्ट्रेशन कर लिया था ऐडमिशन

देरी वाले दाखिलों पर मुहर के लिए फिर खुला LURN

कई कॉलेजों नए कोर्स शुरू करने की देर से मिली थी अनुमति

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊ

विद्यार्थियों का साल बचाने के लिए लविवि ने लखनऊ विश्वविद्यालय पोर्टल फिर से खोल दिया है। इससे बिना एलयूआरएन कोलेजों में प्रवेश लेने वाले कॉलेजों के साथ ही विद्यार्थियों को काफी राहत मिली है। इसके अलावा बीएड स्टूडेंट्स के साथ ही नए कोर्स की देर से संबद्धता पाने वाले कॉलेजों को भी फायदा मिलेगा। एनबीटी ने 28 अक्टूबर और 4 नवंबर के अंक में समाचार प्रकाशित कर विद्यार्थियों की यह समस्या प्रमुखता से उठाई थी।

इसी सत्र से लागू हुई व्यवस्था

इस सत्र ने एलयू ने एलयूआरएन की व्यवस्था लागू की है। विवि ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि बिना एलयूआरएन के कोई भी प्रवेश मान्य नहीं होगा। 22 सितंबर को एलयूआरएन पोर्टल बंद कर दिया गया था। हालांकि संबद्ध कॉलेजों की मांग पर 12 से 15 अक्टूबर तक पोर्टल एक बार फिर खोला गया था।

बिना LURN प्रवेश, कैसे देंगे प

28 अक्टूबर को प्रकाशित हुई खबर

वहीं, केकेसी समेत कुछ अन्य कॉलेजों ने बिना एनयूआरएन चेक किए बड़ी संख्या में प्रवेश ले लिए थे। परीक्षा की डेट घोषित होने पर जिम्मेदारों को एलयूआरएन की सुध आई। बिना एलयूआरएन के परीक्षा देने की अनुमति नहीं है। ऐसे में साल खराब होता देख 27 अक्टूबर को विद्यार्थियों ने केकेसी में प्रदर्शन करते हुए एलयूआरएन खोलने की मांग उठाई थी। एलयू वीसी और रजिस्ट्रार से भी गुहार लगाई गई थी।

बीएड के स्टूडेंट भी थे परेशान

एलयूआरएन के बिना दाखिले से बीएड के विद्यार्थी भी परेशान थे। कार्ड्सलिंग के बाद बीएड में प्रवेश लेने वालों ने भी रजिस्ट्रेशन नहीं करवाया था। इसी तरह केकेवी में एमएससी भूगर्भ विज्ञान की पढ़ाई की अनुमति मिलने तक पोर्टल बंद हो चुका था। ऐसे में कॉलेज की तरफ से रजिस्ट्रार को पत्र लिखा गया था। इसके साथ कई अन्य कॉलेजों को भी नए कोर्स शुरू करने की अनुमति देर से मिली थी। ऐसे में विवि पर पोर्टल खोलने को लेकर कॉलेजों के साथ ही विद्यार्थियों का भी दबाव था।

NBT Lens — सार्वजनिक क्यों नहीं की सूचना? — समझिए खबरों के अंदर की बात

एलयू ने परीक्षा फॉर्म भरने की तारीख बढ़ाई। इसे सार्वजनिक किया गया। इससे पहले भी एलयूआरएन पोर्टल खोला गया था। इसकी सूचना भी सार्वजनिक की गई थी। पर, इस बार एलनयूआरएन खोले जाने की सूचना सार्वजनिक नहीं की गई। सिर्फ कॉलेजों को सूचना दे दी गई कि वह अपने स्टूडेंट्स का एलयूआरएन अपडेट करा लें। गलतियां सुधारने के लिए ऐसा किया गया। एक तरफ कुछ कॉलेजों में बिना एलयूआरएन के प्रवेश लेने वाले स्टूडेंट्स का साल खराब हो रहा था। दूसरी तरफ बीएड में प्रवेश लेने वालों का एलयूआर करराना भी जरूरी था। कुछ कॉलेजों को देर से नए कोर्स शुरू करने की संबद्धता दी गई,उनकी सीट भर सकें,इस लिए भी एलयूआरएन खोलना जरूरी था। एलयूआरएन खोले जाने की सूचना सार्वजनिक न किए जाने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि कहीं अचानक से बहुत अधिक संख्या न हो जाए और समय से कोर्स समाप्त न हो पाए।

केमिस्ट्री पढ़ते-पढ़ते बन गई ज़िंदगी की केमिस्ट्री

LU: स्थापना दिवस पर होगा डॉ. अश्वनी और डॉ. संगीता का सम्मान

Rishi.Sengar@timesgroup.com

लखनऊ: यूएसए के शिकागो स्थित लेक काउंटी में वरिष्ठ प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अश्वनी कुमार सिंह की लाइफ किसी फिल्मी स्टोरी से कम नहीं है। एलयू में केमिस्ट्री की पढ़ाई करते-करते कब सहपाठी संगीता से जीवन की केमिस्ट्री बन गई, पता ही नहीं चला। जिंदगी साथ बिताने के वादे के साथ ही पढ़ाई पर पूरा ध्यान दिया और आज दोनों साथ हैं। विवि से पीजी के बाद सीडीआरआई से पीएचडी भी साथ की थी।

लखनऊ निवासी वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अश्वनी कुमार सिंह ने बताया कि बीएससी के लिए एलयू में प्रवेश लिया था। इस लखनऊ की ही संगीता भी बीएससी कर रही थीं। साथ पढ़ने के दौरान दोनों एक दूसरे को पसंद करने लगे। साल 1982 में बीएससी के बाद दोनों ने एमएससी में प्रवेश लिया। 1984 में रसायन विज्ञान से एमएससी के बाद सीडीआरआई से पीएचडी शुरू किया। इसी दौरान 1985 में दोनों ने शादी कर ली। पीएचडी पूरी करने के बाद दंपति यूएसए चले गए। शिकागो स्थित लेक काउंटी में तैनात डॉ. अश्वनी कुमार सिंह के दो बेटे और एक बेटी हैं। डॉ. अश्वनी ने बताया कि वावा रामलाल सिंह के साथ ही पिता राजकुमार सिंह भी एलयू में पढ़ चुके हैं। पिता

इनका भी होगा सम्मान

वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि एलयू के छात्र रह चुके सीनियर जज एआर मसूदी, डॉ. अश्वनी कुमार सिंह, असम के पुलिस महानिदेशक ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह, इसरो की वरिष्ठ वैज्ञानिक ऋतु करिधाल, सीए मुकेश कुमार शुक्ला, नेपाल के सांसद रमेश लेखक और पत्रकार प्रतीक त्रिवेदी को सम्मानित किया जाएगा।

HINDUSTAN PAGE 6

तालुकेदारों ने 30 लाख रुपए चंदा इकट्ठा कर बनवाई थी यूनिवर्सिटी, आज देश-दुनिया में चमक रहे यहां के पढ़े हुए सितारे

एलयू आज मनाएगा अपना 103वां स्थापना दिवस

जश्न

■ शाश्वत मिश्रा

लखनऊ। अवध में उच्च शिक्षा की जरूरत को ध्यान में रखकर लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। इसके लिए तालुकेदारों ने करीब 30 लाख रुपए चंदा इकट्ठा किया था।

लखनऊ विश्वविद्यालय का इतिहास 156 वर्षों का है। जिसकी शुरूआत वर्ष 1864 से कैनिंग कॉलेज के रूप में की गई। आगे चलकर यह संस्थान वर्ष 1920 में लखनऊ विश्वविद्यालय के तौर पर स्थापित हुआ। विवि के रिकॉर्ड के मुताबिक स्थापना में अवध के तालुकेदारों की चाहत थी कि उनके बच्चे जब कॉल्चिन कॉलेज से 12वीं पढ़कर निकलें तो उन्हें उच्च शिक्षा के लिए किसी दूसरे स्थान पर न जाना पड़े क्योंकि उस समय सिर्फ इलाहाबाद विवि ही था। यहीं से अवध क्षेत्र में एक विश्वविद्यालय की स्थापना करने की सोच ने जन्म लिया। इसके बाद राजा महमूदाबाद, सर मोहम्मद अली और मोहम्मद खान बहादुर ने विवि की बुनियाद रखी। जिसमें यूनाइटेड प्रोविंस के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर हारकोर्ट बटलर ने भी साथ दिया। इसके बाद 10 नवंबर, 1919 को हुई एक बैठक में आवासीय विश्वविद्यालय बनाने का निर्णय लिया गया। विधान परिषद में कुंवर महाराजा सिंह ने 12 अगस्त, 1920 को लखनऊ विश्वविद्यालय बिल पेश किया। जिसे 8 अगस्त, 1920 को काफी चर्चा और संशोधनों के साथ पारित कर दिया गया। उस समय विवि के निर्माण के लिए राजा महमूदाबाद और जहांगीराबाद ने एक-एक लाख रुपए दिए थे। वहीं तालुकेदारों ने 30 लाख रुपए का चंदा इकट्ठा किया। जिसके बाद 25 नवंबर, 1920 को लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। आज भी लखनऊ विश्वविद्यालय पूरी दुनिया में अपनी खास साख रखता है और लोगों के बीच लोकप्रिय भी है।

1960 में दी गई पहली पीएचडी डिग्री

एलयू में सर्वप्रथम पीएचडी व डीलिट कार्यक्रम समाज कार्य विभाग में शुरू हुआ था। वर्ष 1948 में जेके इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियोलॉजी, इकोलॉजी एंड ह्यूमन रिलेशन की स्थापन की गई। उस समय निदेशक प्रो. राधा कमल मुखर्जी थे। पहली पीएचडी डिग्री साल 1960 में एबी बोस को दी गई थी। जबकि वर्ष 1984 में पहली डीलिट उपाधि प्रो. सुरेंद्र सिंह को मिली।

स्थापना दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर खूबसूरत रोशनी से सजा एलयू।

इनका होगा सम्मान

डॉ. अश्वनी कुमार सिंह: एलयू से 1984 में केमिस्ट्री से एमएससी। लेक काउंटी में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं।

ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह: असम के पुलिस महानिदेशक हैं। एलयू से 1988 में भूगर्भ विज्ञान विषय से एमएससी।

ऋतु करिधाल: इसरो की वरिष्ठ वैज्ञानिक ऋतु ने 1998 में भौतिक विज्ञान में एमएससी की।

मुकेश कुमार शुक्ला: एलयू से 1992 में एमकॉम। लखनऊ के प्रख्यात चार्टर्ड अकाउंटेंट में से एक हैं।

रमेश लेखक: नेपाल के सांसद व पूर्व मंत्री रमेश लेखक ने 1989 में एलयू एलएलबी की थी।

प्रतीक त्रिवेदी: जाने माने न्यूज एंकर व पत्रकार प्रतीक ने एलयू से एमजीएमसी की डिग्री 1991 में प्राप्त की।

न्यायमूर्ति ए.आर. मसूदी: एलयू से वर्ष 1988 में एलएलबी पास की। मसूदी आज उच्च न्यायालय इलाहाबाद की लखनऊ खंडपीठ में सीनियर जज हैं।

वैज्ञानिक अश्विनी को डिग्री व हमसफर दोनों एलयू ने दिए

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के 103वें स्थापना दिवस पर पूर्व छात्र और यूएसए के शिकागो स्थित लेक काउंटी में वरिष्ठ प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अश्वनी कुमार सिंह को सम्मानित किया जाएगा। वह शुक्रवार को ही राजधानी पहुंच गए।

लखनऊ निवासी वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अश्वनी कुमार सिंह ने बताया कि उन्होंने वर्ष 1979 में बीएससी की पढ़ाई के लिए एलयू में प्रवेश लिया था। उस वक्त डॉ. संगीता सिंह भी पढ़ाई कर रहीं थीं। पढ़ाई के दौरान ही दोनों में प्यार हो गया। दोनों ने साथ में वर्ष 1982 में बीएससी और 1984 में रसायन विज्ञान से एमएससी किया। सीडीआरआई से पीएचडी की। वर्ष 1985 में डॉ. संगीता से शादी कर ली। डॉ. अश्वनी के अनुसार, पीएचडी करने के बाद दोनों यूएसए चले गए। उन्होंने बताया कि उनके पिता भी वैज्ञानिक थे। बाबा रामलाल सिंह और पिता राजकुमार सिंह भी एलयू से पढ़े। डॉ. अश्वनी का कहना है कि उनके पर दादा राय बिहारी लाल कॉन्ट्रेक्टर थे। एलयू के पास उनके नाम से राय बिहारी लाल रोड भी है।

377 से साढ़े तीन लाख विद्यार्थियों तक कारवां

वर्ष	विद्यार्थी
1865	377
1866	518
1867	533
1868	621
1869	666
2020	1,35,000
2022	2,60,000
2023	3,50,000

दो से 556 कॉलेजों का हुआ एलयू का परिवार

वर्ष	कॉलेज
1921	आईटी, केजीएमयू।
1946	पांच
2017	127
2019	176
2022	545
2023	556 (34 अनुदानित, 14 राजकीय व 508 निजी कॉलेज)

i-NEXT PAGE 4

आज पूरा हो जाएगा एलयू के 103 स्वर्णिम सालों का सफर

1864 में स्थापित कैनिंग कॉलेज 56 साल बाद 25 नवंबर, 1920 में बना विश्वविद्यालय

LUCKNOW (24 Nov): लखनऊ विश्वविद्यालय ने शनिवार को अपने स्वर्णिम 103 साल पूरे कर लिए हैं. वर्ष 1864 में कैनिंग कालेज के रूप में इसकी नींव रखी गई थी. 55 साल बाद 25 नवंबर, 1920 में यह विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित हो गया. यहां के प्रो. बीरबल साहनी, प्रो. राधा कमल मुकर्जी, प्रो. वीएस राम, प्रो. डीपी मुकर्जी, प्रो. सिद्धांत जैसे विद्वान शिक्षकों की वजह से विश्वविद्यालय को नई पहचान मिली. स्थापना दिवस समारोह मालवीय सभागार में होगा. इस दौरान शाम-ए-अवध कार्यक्रम भी होगा. मुख्य अतिथि केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी सात पूर्व छात्र-छात्राओं को सम्मानित करेंगी. आकेंस्ट्रा पर बेगम अख्तर की गजल की प्रस्तुत होगी। विभिन्न कलाकार कथक, कजरी और उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य भी प्रस्तुत करेंगे। हेरिटेज

छात्राओं के लिए कभी एक ही हास्टल था

लवि में छात्राओं के लिए शुरुआत में केवल एक वेलाहा हास्टल था, आज छात्राओं के लिए सात हास्टल हैं. छात्र-छात्राओं को मिलाकर 18 हास्टल है, जिसमें लखनऊ मंडल के अलावा आगरा, अलीगढ़, गोरखपुर, बलिया, प्रयागराज, आजमगढ़, देवरिया, मुरादाबाद, बरेली, इटावा, बलगुरु आदि जगहों के विद्यार्थी रहकर पढ़ते हैं.

कारवां बढ़ता गया

- सन 1864 : कैनिंग कालेज के रूप में हुसैनाबाद कोठी नींव पड़ी
- सन 1866 : डिग्री कक्षाओं की शुरुआत 377 विद्यार्थियों से हुई
- 25 नवंबर 1920 : लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई
- जुलाई 2021 : पहले शैक्षिक सत्र की शुरुआत
- सन 1922 : प्रो. वीएस राम ने देश के पहले राजनीति शिक्षक विभाग की स्थापना
- सन 1936 : प्रो. बीरबल साहनी फेलो आफ रायल सोसायटी आफ लंदन चुने गए
- 1960 : प्रो. आरयू सिंह डीन, लो ने नेपाल के संविधान की ड्राफ्टिंग की
- 1960 : फिजिक्स विभाग में पहला रेडियो ट्रांसमिशन की स्थापना
- प्रो.वली मोहम्मद, फिजिक्स के पूर्व हेड : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी यूके में इनके नाम से स्कालरशिप
- नवंबर 2021 - क्यूएस एशिया रैंकिंग, टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग में पहला राज्य विश्वविद्यालय
- जुलाई 2022 - नैक ए प्लस प्लस ग्रेड
- नवंबर 2022 : पहली महिला डिरेक्टर टीम
- अक्टूबर 2023 : विश्व के टाप दो प्रतिशत विज्ञानी में लवि के छह शिक्षक शामिल

आज ये होंगे सम्मानित

डा. रितु करिधाल-वरिष्ठ वैज्ञानिक, इसरो, डा. अश्वनी कुमार सिंह-वरिष्ठ प्रमुख वैज्ञानिक, लेक काउंटी, शिकागो, यूएसए, ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह-पुलिस महानिदेशक-असेम, मुकेश कुमार शुक्ला-चार्टर्ड अकाउंटेंट लखनऊ, रमेश लेखक-संसद नेपाल, प्रतीक त्रिवेदी-न्यूज एंकर, वरिष्ठ न्यायाधीश न्यायमूर्ति एआर मसूदी-इलाहाबाद उच्च न्यायालय, लखनऊ खंडपीठ.

ने विधि की पढ़ाई में अहम भूमिका निभाई, द्वितीय परिसर में इंजीनियरिंग, फार्मेसी, योग, इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट साइंस, डा. शंकर दयाल शर्मा इंस्टीट्यूट आफ डेमोक्रेसी, डा. गिरी लाल गुप्ता इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक हेल्थ, इंस्टीट्यूट आफ रिन्यूएबल एनर्जी को मिलाकर आठ संस्थान संचालित हैं. एलयू के छात्र खेलों में भी आगे रहे. हाकी में ओलिंपियन केडी सिंह बाबू, जमनलाल शर्मा, अर्जुन अवार्डी बैडमिंटन की खिलाड़ी मीना शाह, ध्यानचंद अवार्ड जीतने वाले हाकी खिलाड़ी सैयद अली, क्रिकेटरों में सुरेश रैना, आरपी सिंह, तैराकी में एशियन गेम्स की विजेता कृति मिश्रा जैसे कई अन्य खिलाड़ी रहे.

नए कैंपस की नई बातें

एलयू का नए कैंपस जानकीपुरम में है. इसके निदेशक प्रो. बीडी सिंह बताते हैं कि एलएलबी तीन वर्षीय कोर्स 1921 में पुराने परिसर में शुरू हुआ था. 1938 से 1956 तक डीन रहे डा. आरयू सिंह ने विधि की पढ़ाई में अहम भूमिका निभाई। द्वितीय परिसर में इंजीनियरिंग, फार्मेसी, योग, इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट साइंस, डा. शंकर दयाल शर्मा इंस्टीट्यूट आफ डेमोक्रेसी, डा. गिरी लाल गुप्ता इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक हेल्थ, इंस्टीट्यूट आफ रिन्यूएबल एनर्जी को मिलाकर आठ संस्थान संचालित हैं. एलयू के अलावा माध्यमिक कृषि बायोप्रोसेसिंग (एसएबी) प्रथाओं की भूमिका पर रोशनी डाली। इसमें उत्पादकता बढ़ाने के लिए टिकाऊ और कुशल प्रथाओं के लिए कटाई के बाद फसलों का प्रसंस्करण शामिल है। सीमैप लखनऊ के निदेशक डॉ.प्रबोध त्रिवेदी ने नई जीन संपादन तकनीक यानी सीआरआईएसपीआर सीएएस की समय-सीमा पर चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने जीन को विनियमित करने और फसलों में मेटाबोलाइट्स को प्रभावित करने में इस विशिष्ट जीन-संपादन तकनीक के अनुप्रयोग पर प्रकाश डाला। प्रो.एनएस सांगवान, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने अश्वगंधा और तुलसी जैसे औषधीय पौधों में औषधीय यौगिकों को संशोधित करने के लिए जीनोमिक हेरफेर की भूमिका के बारे में बताया। सम्मेलन के आयोजन सचिव प्रो. मुन्ना सिंह और आईएसएबी के अध्यक्ष प्रो. एसएल मेहता ने बधाई दी और प्रख्यात वक्ताओं को विभागीय स्मारिका भेंट की।

JAGRAN CITY PAGE III

मीठी यादें

अपने टिफिन का खाना खिला देते थे शिक्षक

साल 1977 से 1983 तक एम.एससी. और पीएचडी जंतु विज्ञान से की। कभी उदास हुआ तो प्रो. बीके टंडन पूछते थे कि घर से पैसे नहीं आया क्या? फिर खाने के लिए आधा सेब दे देते थे। प्रो. एससी बाग ने एक बार खेलिंग मत्सा होम पर खड़ा कर दिया और 100 बार बोलने के लिए कहा जो आज भी याद है। प्रो. के.सी पांडेय तेब में अपने टिफिन से खाना खिला देते थे।

प्रो. एलएस सिंह, कुलपति, नेपाल नवीन विश्वविद्यालय, सहरसा-सुपर

साइकिल से पिक्चर देखने तो कभी अमीनाबाद जाते थे

कैंपस की यादें हमेशा ताजा रहती हैं। साल 1983 से 1987 तक बी.एससी, एम.एससी. फिजिक्स की पढ़ाई की। बीरबल साहनी और सुभाष हास्टल में रहता था। साइकिल थी तो कभी अमीनाबाद किताबें लेने तो कभी हजरतगंज में पिक्चर देखने भी निकल जाते थे। पढ़ाई के बाद सेना में चयन हो गया।

शाहनवाज अली खान दुरानी, लेफ्टिनेंट

खेलों में भी आगे

लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र खेलों में भी आगे रहे। हाकी में ओलिंपियन केडी सिंह बाबू, जमनलाल शर्मा, अर्जुन अवार्डी बैडमिंटन की खिलाड़ी मीना शाह, ध्यानचंद अवार्ड पाने वाले हाकी खिलाड़ी सैयद अली, क्रिकेटरों में सुरेश रैना, आरपी सिंह, तैराकी में एशियन गेम्स की विजेता कृति मिश्रा

पढ़ाई के समय हमेशा मिली शिक्षकों की मदद

साल 1996 में एम.एससी इलेक्ट्रानिक एंड कम्युनिकेशन और पीजी डिप्लोमा इन ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट की पढ़ाई है। हेड प्रोफेसर एलएम बत्ती का सहयोग मिलता था। विश्वविद्यालय के पीछे मिलने वाला बड़ा मटर बहुत पसंद था। कैंपस के लिए काम आई तो प्रोफेसर मुल्यांकन से लेकर कापी चीजों को समय से कराने में शिक्षकों ने मदद की थी।

प्रशांत गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, राष्ट्रीय इलेक्ट्रानिक्स व सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान

शिक्षक थे सख्त और अच्छा था पढ़ाई का माहौल

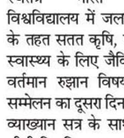

कैंपस में बिताए दिन कभी नहीं भूल सकता। साल 1990 से 1996 तक बी.एससी और एम.एससी फिजिक्स से लिया। पढ़ाई का माहौल बहुत अच्छा था। शिक्षक काफी सख्त थे। विद्यार्थियों पर बहुत ध्यान देते थे। खासकर प्रैक्टिकल पर अधिक फोकस होता था। बिना देखे-समझे नंबर नहीं मिलते थे। कैंटीन जाना, क्रिकेट खेलना भी बहुत पसंद था।

डा.अनुज शुक्ला, वरिष्ठ वैज्ञानी, डीआरडीओ

पढ़ाई संग दोस्तों के साथ घूमना-फिरना भी होता था

मेरे पापा कर्नल सलीम दुरानी, दादा कैप्टन शाहिद अली खान दुरानी और मेने लवि से पढ़ाई की है। साल 2014 में बीए, 2019 में एमए हिस्ट्रस स्टडी की डिग्री ली। पढ़ाई के साथ घूमना-फिरना भी होता था। कई बार तो घर निकले लवि के लिए, लेकिन बीच में ही कभी दोस्त के घर तो कभी दिल्ली देखने भी निकल जाते थे। पढ़ाई के बाद सेना में चयन हो गया।

शाहनवाज अली खान दुरानी, लेफ्टिनेंट

लखनऊ विश्वविद्यालय @103 वर्ष

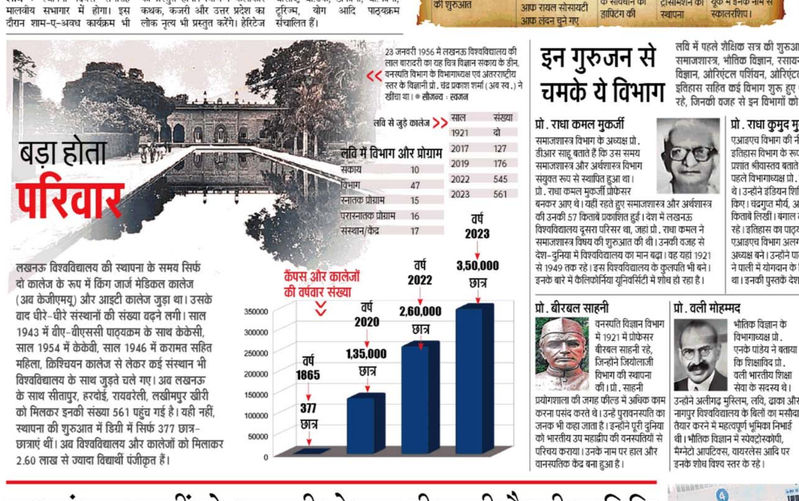

स्थापना दिवस आज

1864 में स्थापित कैनिंग कालेज 56 साल बाद 25 नवंबर 1920 को बना था विश्वविद्यालय

गौरवशाली इतिहास की आभा : लखनऊ विश्वविद्यालय की रोशनी से सजी भव्य इमारत की आभा मानो उसके गौरवशाली इतिहास की चमक बिखेर रही है • हजारा मीडी

जागरण संवाददाता, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने शनिवार को अपने स्वर्णिम 103 साल पूरे कर लिए हैं। वर्ष 1864 में कैनिंग कालेज के रूप में इसकी नींव रखी गई थी। 55 साल बाद 25 नवंबर, 1920 में यह विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित हो गया। यहां के प्रो. बीरबल साहनी, प्रो. राधा कमल मुकर्जी, प्रो. राधा कुमुद मुकर्जी, प्रो. वीएस राम, प्रो. डीपी मुकर्जी, प्रो. सिद्धांत विद्वान शिक्षकों की वजह से विश्वविद्यालय को नई पहचान मिली। इस बीच तमाम उतार-चढ़ाव और स्वर्णिम उपलब्धियों के साथ विश्वविद्यालय का यह कारवां बढ़ता जा रहा है।

शाम-ए-अवध से सजेगी शाम : स्थापना दिवस समारोह मालवीय सभागार में होगा। इस दौरान शाम-ए-अवध कार्यक्रम भी होगा। मुख्य अतिथि केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी सात पूर्व छात्र-छात्राओं को सम्मानित करेंगी। आकेंस्ट्रा पर बेगम अख्तर की गजल की प्रस्तुत होगी। विभिन्न कलाकार कथक, कजरी और उत्तर प्रदेश का लोक नृत्य भी प्रस्तुत करेंगे। हेरिटेज वाक भी होगा।

नए कैंपस की नई बातें : लखनऊ विश्वविद्यालय पर कैंपस जानकीपुरम में है। इसके निदेशक प्रो. बीडी सिंह बताते हैं कि एल एल.बी तीन वर्षीय कोर्स 1921 में पुराने परिसर में शुरू हुआ था। 1938 से 1956 तक डीन रहे डा. आरयू सिंह ने विधि की पढ़ाई में अहम भूमिका निभाई। द्वितीय परिसर में इंजीनियरिंग, फार्मेसी, योग, इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट साइंस, डा. शंकर दयाल शर्मा इंस्टीट्यूट आफ डेमोक्रेसी, डा. गिरी लाल गुप्ता इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक हेल्थ, इंस्टीट्यूट आफ रिन्यूएबल एनर्जी को मिलाकर आठ संस्थान संचालित हैं। इनमें एमबीए, बीबीए, बीसीए, बी.टेक, डीफार्मा, बी.फार्मा, टूरिज्म, योग आदि पाठ्यक्रम संचालित हैं।

आज ये होंगे सम्मानित

डा. रितु करिधाल-वरिष्ठ वैज्ञानिक, इसरो, डा. अश्वनी कुमार सिंह-वरिष्ठ प्रमुख वैज्ञानिक, लेक काउंटी, शिकागो, यूएसए, ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह-पुलिस महानिदेशक-असेम, मुकेश कुमार शुक्ला-चार्टर्ड अकाउंटेंट लखनऊ, रमेश लेखक-संसद नेपाल, प्रतीक त्रिवेदी-न्यूज एंकर, वरिष्ठ न्यायाधीश न्यायमूर्ति एआर मसूदी-इलाहाबाद उच्च न्यायालय, लखनऊ खंडपीठ.

केनिंग कालेज से लवि की यात्रा

- सन 1864 केनिंग कालेज के रूप में हुसैनाबाद कोठी में नींव पड़ी
- सन 1866 डिग्री कक्षाओं की शुरुआत 377 विद्यार्थियों से हुई।
- 25 नवंबर 1920 लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई
- जुलाई 2021 पहले शैक्षिक सत्र की शुरुआत
- सन 1922 प्रो. वीएस राम ने देश के पहले राजनीति विज्ञान विभाग की स्थापना
- सन 1936 प्रो. बीरबल साहनी फेलो आफ रायल सोसायटी आफ लंदन चुने गए
- 1960 प्रो. आरयू सिंह डीन, लो ने नेपाल के संविधान की ड्राफ्टिंग की
- 1960 फिजिक्स विभाग में पहला रेडियो ट्रांसमिशन की स्थापना
- नवंबर 2021 क्यूएस एशिया रैंकिंग, टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग में पहला राज्य विश्वविद्यालय
- जुलाई 2022 नैक ए प्लस प्लस ग्रेड
- नवंबर 2022 : पहली महिला डिरेक्टर टीम
- अक्टूबर 2023 : विश्व के टाप दो प्रतिशत विज्ञानी में लवि के छह शिक्षक शामिल

ऐसे बढ़ी यात्रा

- नवंबर 2021 क्यूएस एशिया रैंकिंग, टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग में पहला राज्य विश्वविद्यालय
- जुलाई 2022 नैक ए प्लस प्लस ग्रेड
- नवंबर 2022 पहली महिला डिरेक्टर टीम
- अक्टूबर 2023 विश्व के टाप दो प्रतिशत विज्ञानी में लवि के छह शिक्षक शामिल

कैंपस और कालेजों की बढ़ती संख्या

23 जनवरी 1956 में लखनऊ विश्वविद्यालय की सातवां कुलपति बना दिया गया। प्रो. राधा कमल मुकर्जी ने 1948 में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की। वर्ष 2021 से ही छात्र अगर एक साल की पढ़ाई के बाद आगे नहीं पढ़ना चाहते तो उन्हें एक साल का सर्टिफिकेट भी दिया गया। चार साल के अंदर दोबारा ऐसे छात्र अपने कोर्स को पूरा भी कर सकते हैं।

लवि में विभाग और प्रोग्राम

संकाय	10
विभाग	47
स्नातक प्रोग्राम	15
परास्नातक प्रोग्राम	16
संस्थान/केंद्र	17

लवि में छात्र

वर्ष	संख्या
1921	दो